SOCIO ECONOMIC SURVEY REPORT UDAIPUR

SESSION 2022-23

GOVERNMENT COLLEGE
NARNAUL

PRESENTED BY
SANJANA CHOUDHARY
M.SC GEOGRAPHY
ROLL.NO. 1009

SUBMITTED TO
DR. HAWA SINGH YADAV SIR
HOD GEOGRAPHY DEPARTMENT

Introduction of Udaipur :-

उदयपुर, जिसे 'झीलों का शहर' या 'राजस्थान का कश्मीर' भी कहा जाता है। एक प्रमुख शहर, नगर निगम और भारतीय राज्य राजस्थान में उदयपुर जिले का प्रशासनिक मुख्यालय है।

यह अरावली पर्वतमाला से घिरा हुआ है, जो इसे थार रेगिस्तान से अलग करती है। यह दिल्ली से लगभग 600 Km और मुंबई से लगभग 800 Km दूर है, लगभग दो प्रमुख मेट्रो शहरों के बीच में स्थित है इसके अलावा, गुजरात बंदरगाहों के साथ Connectivity उदयपुर को रणनीतिक भौगोलिक लाभ प्रदान करती है। इसके अलावा उदयपुर सड़क, रेल और वायु के माध्यम से आसपास के शहरों से अच्छी तरह से जुड़ा हुआ है।

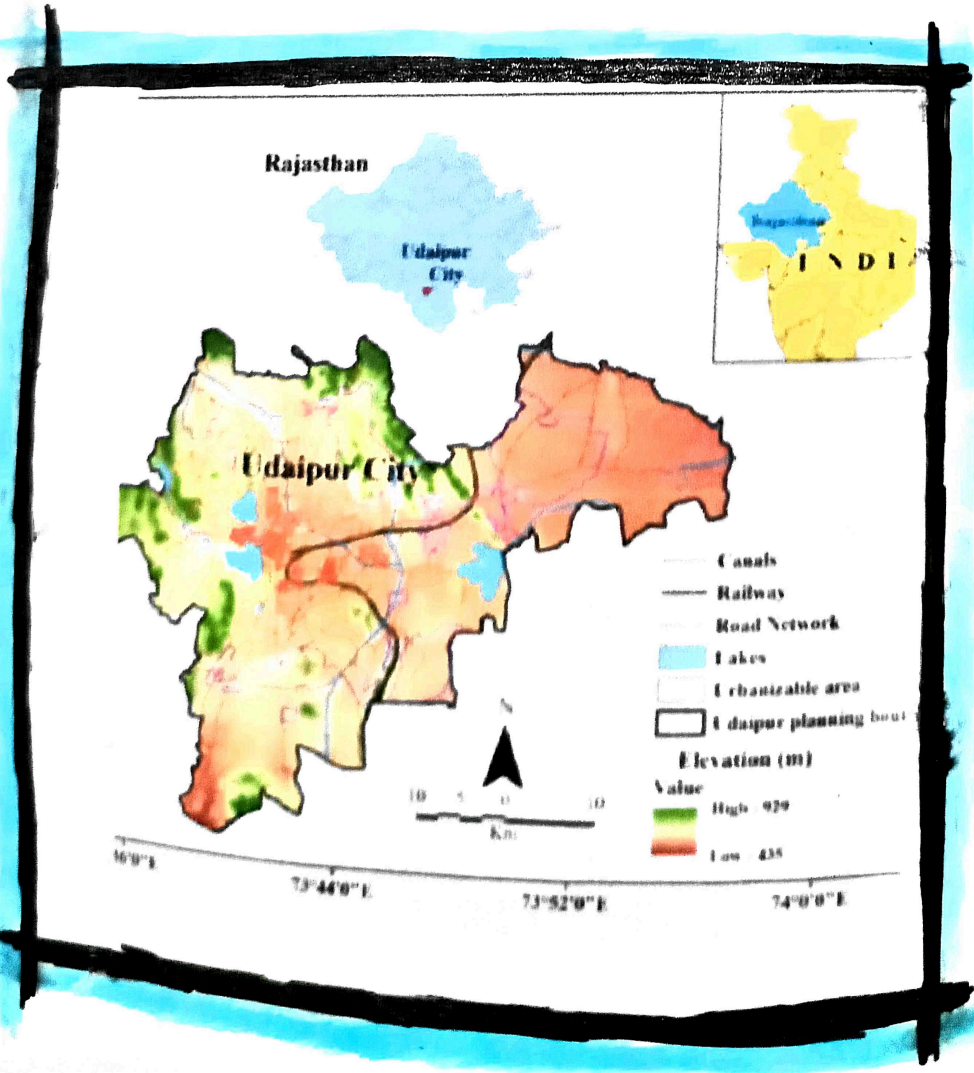

Bedla
Tatta Magra
Tikaliya Magra
Thoriya Magra
FATEH
SAGAR
LAKE
Moti Magri
Bansdara Magra
Sajjan Garh
Ambav Garh
Ahar
Pichholi
Rana Magri
PICHHOLA
LAKE
Machala
Magra

Rajasthan
Udaipur
City
Udaipur City
Canals
Railway
Road Network
Lakes
Elevation (m)
Value
Km
73°44'0"E
73°52'0"E
74°0'0"E

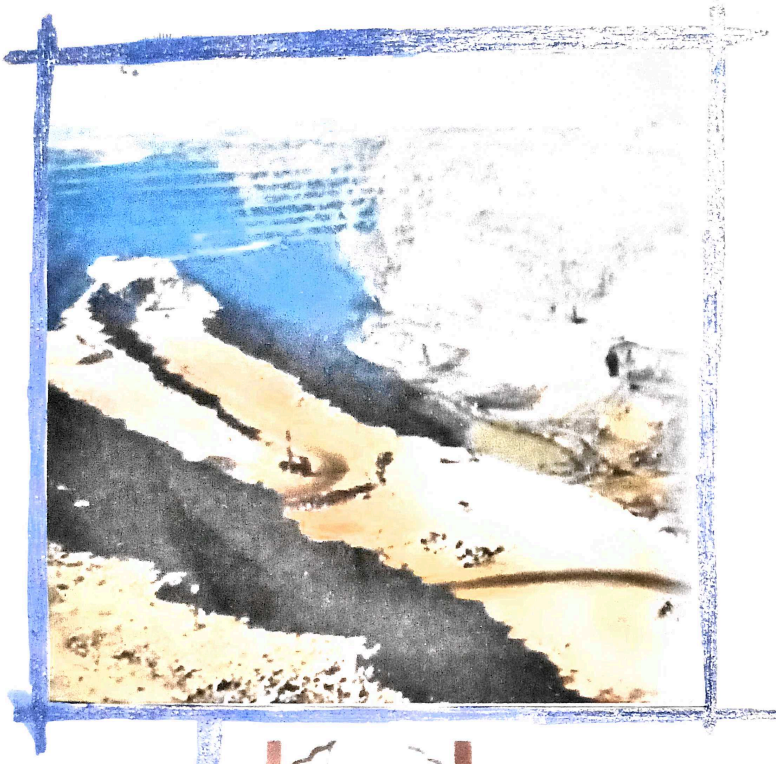

C

D

E

F

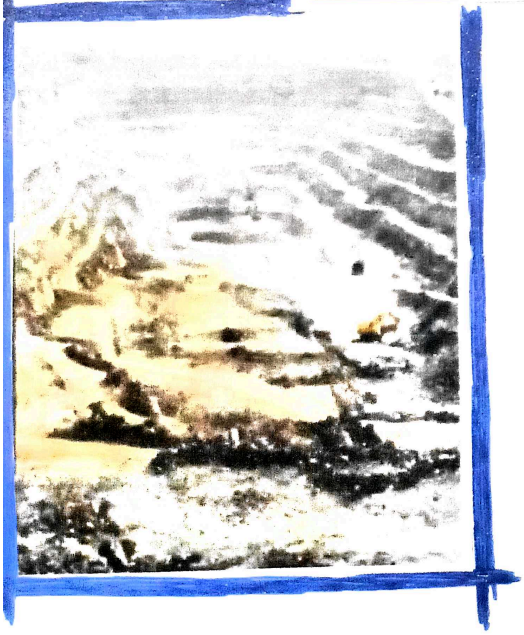

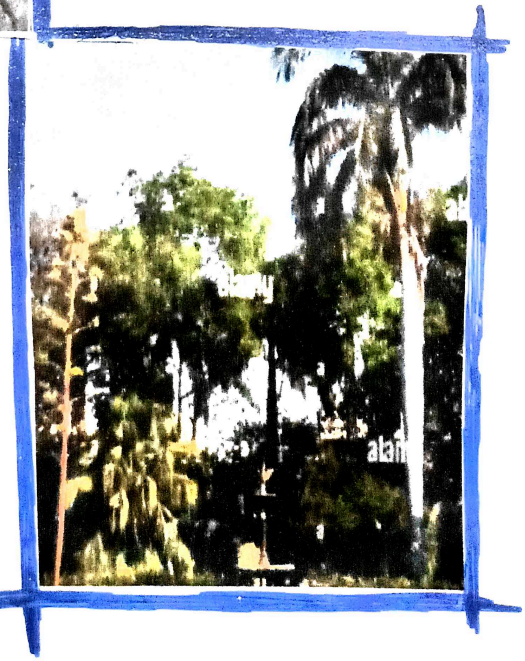

Location and Geographical Area

उदयपुर जिला गुजरात से सटे राजस्थान के दक्षिणी सिरे पर स्थित है। और उत्तर की ओर बहुत संकीर्ण पट्टी के साथ आकार में अंडाकार है। यह 23.46' और 25.5' उत्तरी अक्षांशों और 73.9' और 74.35' पूर्वी देशांतरों के बीच स्थित है। यह उत्तर में राजसमंद और पाली जिले से, दक्षिण में डूंगरपुर और बांसवाड़ा से, पूर्व में भीलवाड़ा और चित्तौड़गढ़ और से घिरा हुआ है। पाली और सिरोही जिलों और साबरकांठा जिले (गुजरात) द्वारा पश्चिम। जिले में 13618 वर्ग km का क्षेत्र शामिल है।

Topography धरातल

जिला उत्तर से पूर्व तक अरावली पर्वतमाला से घिरा हुआ है। जिले के उत्तरी भाग में आमतौर पर ऊँचे पठार होते हैं जबकि

Udaipur - Land of Minerals

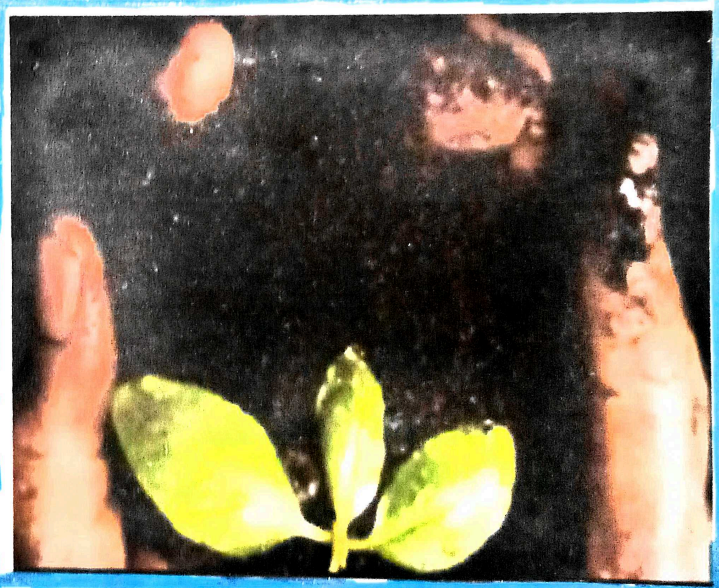

पूर्वी भाग में उपजाऊ मैदानों का विशाल विस्तार होता है। दक्षिणी भाग चट्टानों, पहाड़ियों और घने जंगलों से आच्छादित है। अरावली पर्वतमाला में दो महत्वपूर्ण मार्ग है। देसुरी नाल और साओके जो उदयपुर और जोधपुर जिले के बीच एक कड़ी के रूप में काम करते है।

Minerals :-

उदयपुर जिला खनिज संसाधनों में विशेष रूप से समृद्ध हैं क्योंकि जिले में बड़ी मात्रा में महत्वपूर्ण खनिज पाए जाते हैं। जिले में पाई जाने वाली महत्वपूर्ण धातु और अधातु तांबा, सीसा, जस्ता और चांदी के अयस्क है।

औद्योगिक खनिजों में रॉक, फॉस्फेट, एस्बेस्टस, कैल्साइट, लाइम स्टोन, बेराइट्स, एमराल्ड और मॉर्बल आदि महत्वपूर्ण है। टेल (साबुन का पत्थर) एक अन्य महत्वपूर्ण खनिज भी जिले में पाया जाता है।

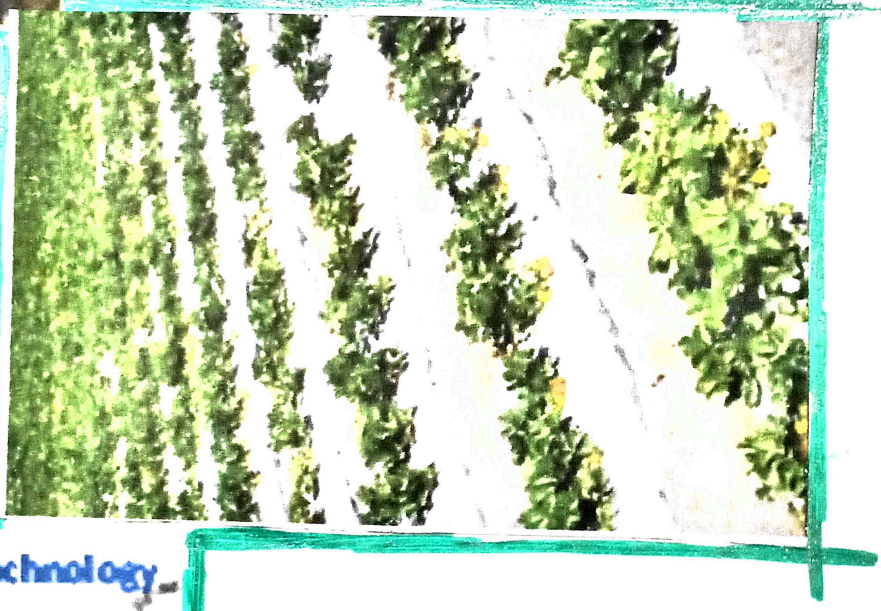

mproved Wheat production technology

Soils :-

उदयपुर जिले में सभी प्रकार की मिट्टी गहरी से मध्यम गहरी चिकनी दोमट मिट्टी गोगुन्दा, कोटरा, झाडोल, गिरवा में उपलब्ध है सलूम्बर एवं धनवण जिले के पश्चिमी भागों में सामान्यतया मिट्टी पथरीली है जबकि पूर्वी एवं रेतीली मिट्टी के छोटे भागों मे पीली भरी मिट्टी मिलती है

Crops :-

उदयपुर में कृषि मुख्य रूप से वर्षा आधारित है विभिन्न फसलों के तहत कुल क्षेत्रफल का लगभग 70% अनाज और बाजरा के लिए किया जाता है जिले में महत्वपूर्ण फसलें मक्का, गेंहू, जौ और चना है जिले के सभी कृषक परिवारों में से लगभग 50% हेक्टेयर के आकार की भूमि पर खेती करते है किसानों की सबसे बड़ी संख्या आदिवासियों की है

CULTURE

इस खूबसूरत शहर में बीते समय में एक समृद्ध सांस्कृतिक विरासत प्राप्त की है। उदयपुर हर साल दुनिया भर से पर्यटकों की पर्याप्त संख्या प्राप्त करता है शहर उनब मी मील जनजाति के लोगों द्वारा बसा हुआ है यहाँ पर गहने के भार के साथ सामान्य राजस्थानी पोशाक मे कपड़े पहने लोग रहते हैं रंगीन त्यौहार और मेले उदयपुर की सांस्कृतिक समृद्धि को दर्शाते हैं

CUISINE

उदयपुर भोजन में शाकाहारी व्यंजन शामिल हैं क्योंकि इस स्थान पर जैन धर्म और वैष्णववाद का प्रभुत्व है यह राजस्थान की भूमि के लिए अद्वितीय मसालों की एक विशाल विविधता के साथ अनुभवी है मसूर से लेकर दही तक के प्रकार के करी मिल सकते हैं। संगरी की किस्म के नाम से सूखे आम के कर्व भोजन मिलते हैं मिर्च का व्यापक उपयोग उदयपुर के भोजन को

GOVT. COLLEGE NARNAUL
SOCIO-ECONOMIC REPORT

NAME-SHEETAL
CLASS ROLL NO-220093181007

CLASS- M.Sc (GEOGRAPHY)FINAL
UNIVERSITY ROLL No.- 201130901006

SESSION-2021-2022

SUBMITTED TO-
Dr. Subhash Sir

SUBMITTED BY-
SHEETAL

ढोसी की पहाड़ी नारनौल: सुप्त ज्वालामुखी और धार्मिक स्थल

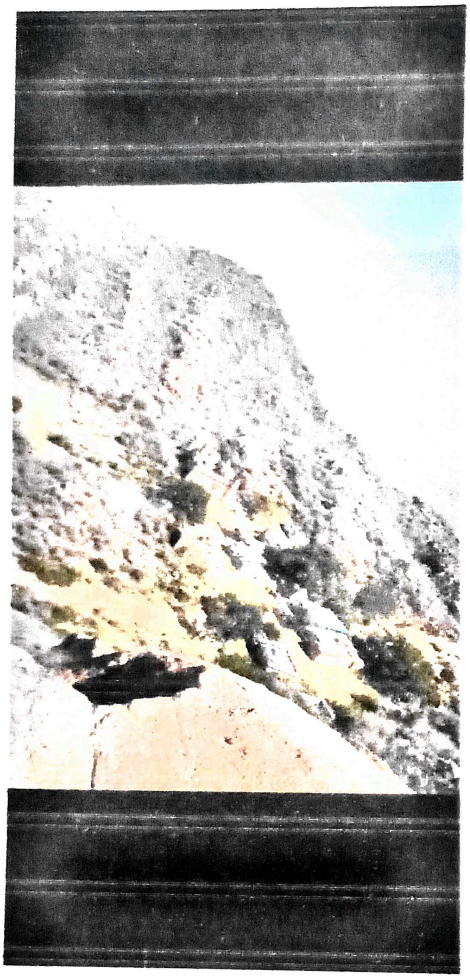

ढोसी की पहाड़ी अरावली पर्वत श्रंखला की एक पहाड़ी है जो हरियाणा के नारनौल शहर के पास है स्तिथ है और वर्तमान में ये पवित्र धाम है| कई लाख साल पहले ये एक ज्वालामुखी था लेकिन वर्तमान में ये निष्क्रिय ज्वालामुखी है| बताया जाता है कि 2 लाख साल पहले आखरी बार यहां लावा विस्फोट हुआ था जिसका प्रमाण पहाड़ी पर बिखरा लावा है जो इतने साल में पत्थर बन गया।

ना केवल ज्वालामुखी बल्कि ढोसी की पहाड़ी का भारत की संस्कृति और इतिहास में विशेष स्थान है। इस पहाड़ी का जिक्र हमें हिन्दू पुराणों और महाभारत में मिलता है। महाभारत के अनुसार अज्ञात वास के दौरान पांडव यहां इसी पहाड़ी पर रुके थे। केवल यही नहीं बल्कि हिंदुओ के प्रमुख वेद भी

पहाड़ी की स्थिति:-

धोसी पहाड़ी भारत में स्थित है, यह दक्षिण हरियाणा एवं उत्तरी राजस्थान की सीमाओं पर स्थित है। पहाड़ी का हरियाणा वाला भाग महेंद्रगढ़ जिले में स्थित है एवं सिंघाणा मार्ग पर नारनौल से 7 किमी दूरी पर है और राजस्थान वाला भाग झुन्झुनू में स्थित है।अरावली पर्वत शृंखला के अंतिम छोर पर उत्तर-पश्चिमी हिस्से में एक सुप्त ज्वालामुखी है, जिसे धोसी पहाड़ी के नाम से जाना जाता है। यह उत्तरी अक्षांश 28*03'39.47" और पूर्वी देशान्तर 76*01'52.63" पर स्थित इकलौती पहाड़ी है, जो कई महत्वपूर्ण और रहस्यमयी कारणों से चर्चित रहती है।इस पहाड़ी का उल्लेख विभिन्न धार्मिक पुस्तकों में भी मिलता है जैसे महाभारत, पुराण आदि।

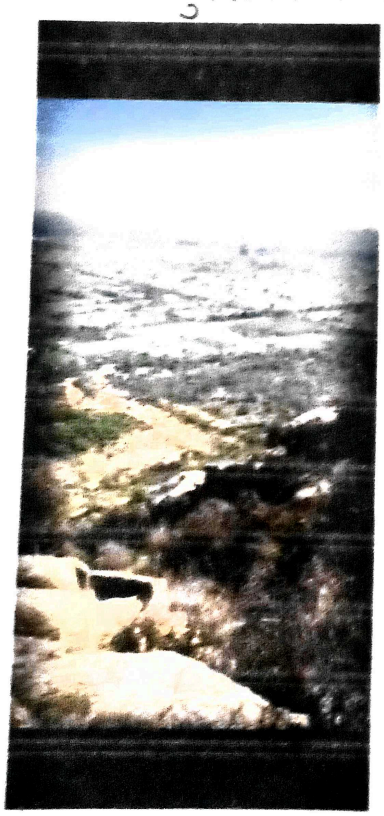

कैसे पहुंचे ढोसी की पहाड़ी

नारनौल शहर से पहाड़ी की दूरी लगभग 12 किलोमीटर है और एक अच्छा दुरुस्त सड़क मार्ग नारनौल से पहाड़ी तक जाने के लिए बना हुआ है। ढोसी की पहाड़ी कुलताजपुर गांव के पास पड़ती है और इसी गांव से पहाड़ी पर चढ़ने का मार्ग सीढ़ियां शुरू होती है। सबसे बढ़िया समय था जाने के लिए मानसून का समय है 1 या 2 बार बरसात होने के बाद था जड़ीबूटियां फल फूल जाती है इसलिए मेरे हिसाब से सबसे अनुचित समय है मानसून।

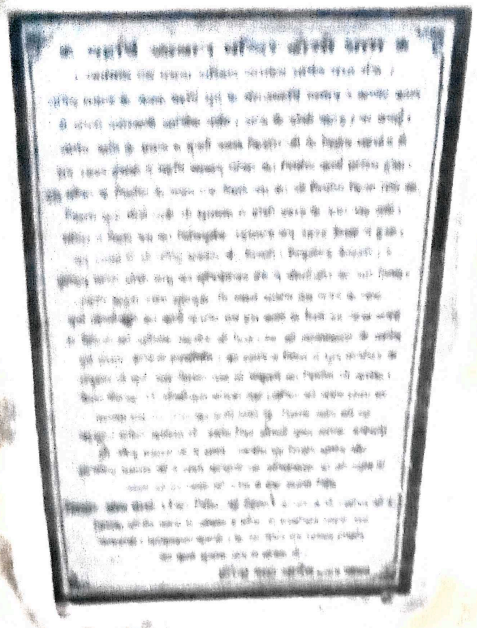

महर्षि च्यवन् मन्दिर ढोसी धाम
भार्गव समाज के जनक महर्षि भृगु के वंशज महर्षि च्यवन् ने ऋग्वेद काल में अपनी तपोस्थली आर्चिक पर्वत (ढोसी पर्वत) पर बनाई।
भार्गव जाति के प्रयत्न व मुन्शी नवल किशोर जी के विशेष सहयोग से सन् 1893 ईसवी से महर्षि मन्दिर का निर्माण कार्य प्रारम्भ हुआ। इस मन्दिर के निर्माण के समय एक पैदल पथ का भी निर्माण किया गया था, जिससे वृद्ध तीर्थ यात्री भी सुगमता से ढोसी पर्वत के ऊपर चढ़ सकें। मन्दिर व पैदल पथ का विधिपूर्वक उद्घाटन सन् 1898 ईसवी में हुआ।
सन् 2003 में श्री सुरेश जी, दिल्ली (तत्कालीन प्रधान, अखिल भारतीय भार्गव सभा) की प्रेरणा से सभी खण्डित मूर्तियों की जगह प्राण प्रतिष्ठा के साथ नई मूर्तियों की स्थापना की गई।
सन् 2008 में श्री नगेन्द्र प्रकाश जी,